ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

BCC 8 — Knowledge and Curriculum

Theories of Knowledge

प्रत्येक काल ज्ञान की व्याख्या समय सापेक्ष हुआ है प्राचीन काल में ज्ञान को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाता है आत्म ज्ञान ही सर्वोच्च ज्ञान था परन्तु धीरे धीरे समय के साथ ज्ञान के सिद्धान्त में बदलाव आया और कुछ सिद्धान्तों में बदलाव आया कुछ प्रभावित रहें ज्ञान के निम्नलिखित सिद्धान्त है :-

1. आधुनिक सिद्धान्त (अनुभववाद)
2. तर्कवाद का सिद्धान्त
3. संवेद विवेकपूर्ण सिद्धान्त
4. प्रायोगिक
5. योग का सिद्धान्त

1 आधुनिक सिद्धान्त / अनुभववादी सिद्धान्त :— यह सिद्धान्त इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त अनुभवों की सहायता से प्राप्त किये ज्ञान पर आधारित है। यह ज्ञान का ऐसा सिद्धान्त है जो ज्ञान को प्राप्त करने में इन्द्रियों के सहयोग पर बल देती है इस सिद्धान्त को अंग्रेज दार्शनिक जॉन लॉक ने अनुभववाद को चेतना प्रदान किया

AIR IMPORTS & EXPORTS | OCEAN IMPORTS & EXPORTS | CONSOLIDATION SERVICES | CUSTOMS CLEARANCE | DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING | DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

इसमें इस तथ्य पर बल दिया गया कि जन्म के समय मनुष्य का मन एक सपाट स्लेट की भाँति होता है जिस पर अनुभवों की सहायता से बहुत कुछ लिखा जा सकता है। एक दूसरे दार्शनिक ह्यूम ने भी इसका समर्थन किया कि मानव का मस्तिष्क उसकी चेतनाओं को जोड़ दिया है। इस प्रक्रिया में मनुष्य अनुपशिक्षता, बौद्धिकता तथा सान्द्रता संरचना का कोई योगदान नहीं होता है। अनुभववादी दार्शनिकों का मानना है कि मन अन्दर कोई जन्मजात प्रत्यय नहीं होता है इन्द्रियानुभूति के पूर्व मन एक कोरा कागज है जिसपर कुछ भी लिखा नहीं होता जो कुछ भी अंकित होता है वह केवल अनुभव द्वारा होता है अतः ज्ञान का स्रोत अनुभव है। अनुभववादी मानते हैं कि ज्ञान निर्णयों की समष्टि है इस प्रकार इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव एवं ज्ञान को ही हम अनुभववाद की प्रमा हेतु है इसके कुछ निम्नलिखित लक्षण होते हैं—

(1) दैनिक जीवन में जो विशिष्ट वस्तुओं का ज्ञान हमें होता है वह अयथार्थ

AIR IMPORTS & EXPORTS
OCEAN IMPORTS & EXPORTS
CONSOLIDATION SERVICES
CUSTOMS CLEARANCE
DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING
DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

नहीं होता।
(ii) ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव है जो इन्द्रियों से प्राप्त होता है।
(iii) मन में अपने आप कोई सम्प्रत्यय जन्म नहीं होता ये जो प्रत्यय होते है सब अनुभव के द्वारा प्राप्त होते है।
(iv) ज्ञान के मौलिक तत्व प्रत्यय है जो अनुभव से प्राप्त होता है।
(v) अनुभववाद के अनुसार ज्ञान की पद्धति आगमनात्मक है।

2. तर्कवाद का सिद्धान्त :- तर्कवाद यह निश्चित करता है कि तर्क ही ज्ञान का एक मात्र साधन है जब कि अनुभववाद इन्द्रिय जनित ज्ञान को मानता है लेकिन तर्कवाद इन्द्रिय जनित ज्ञान को कच्चा माल की संज्ञा देता है जिसको आकार देने का कार्य तर्क द्वारा किया जाता है। कच्चे माल का स्वयं कोई ज्ञानात्मक मूल्य नहीं होता जब तक उसे तर्क द्वारा पक्का नहीं किया जाय। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान तब तक सही नहीं है जब तक तर्क उसे तराशता नहीं और विभिन्न रंगो रूपक से आकार देना तर्क पर निर्भर करता है। यूनानि

AIR IMPORTS & EXPORTS | OCEAN IMPORTS & EXPORTS | CONSOLIDATION SERVICES | CUSTOMS CLEARANCE | DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING | DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

दार्शनिक प्लेटो को तर्कवाद का जनक कहा जाता है। वास्तविकता विचारों में है मस्तिष्क में है शुद्ध प्रकार में है। तर्कवाद का मानना है फूल भी उतना ही सुन्दर है जैसा कि उसका विचार है फूल स्वयं में कोई जन्मजात सौन्दर्य नहीं होता

3. संवेद विवेकपूर्ण सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त में चेतना को महत्वपूर्ण माना गया है। अरस्तु पूर्ण अनुभववाद तथा तर्कवाद को स्वीकार नहीं किया गया है उनका मानना है कि चेतना तथा तर्क ज्ञान के निर्माण में आवश्यक रूप से सहयोगी है। चेतना सामग्री की क्षमता को तर्क के द्वारा वास्तविक बनाया जाता है और इस प्रकार हमारे पास विचारों तथ्यों, सिद्धान्तों तथा ज्ञान प्रणाली का व्यवस्थित स्वरूप होता है। कान्त के विचारों में हम अनुभव के साथ ज्ञान के उद्देश्य के लिए कार्य शुरू कर सकते हैं परन्तु अनुभव स्वयं में ज्ञान प्रदान नहीं करते। इसमें ज्ञान को रूप देने के लिए तर्क की आवश्यकता होती है। यही विचार शैक्षिक प्रक्रिया

AIR IMPORTS & EXPORTS | OCEAN IMPORTS & EXPORTS | CONSOLIDATION | CUSTOMS

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ROBINSONS
CARGO AND LOGISTICS
ON THE MOVE

में भी लागू होता है। आधुनिक विद्यालय में
मस्तिष्क एवं चेतना दोनों को प्रशिक्षण दिया
जाता है। शिक्षण कौशल मस्तिष्क तथा चेतना
की सहायता से ज्ञान प्राप्त करने के लिए
विद्यार्थियों अभिप्रेरित करता है ताकि वे
सफल जीवन यापन कर सके।

Will Continue Next Class

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner